Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاسۡتَعِیۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَالصَّلٰوۃِ
وَاِنَّہَا لَکَبِیۡرَۃٌ اِلَّا
عَلَی الۡخٰشِعِیۡنَ

सूरः बकरः , आयत : 46

अनुवाद : और सब्र और नमाज़ के साथ मदद माँगो, और निःसंदेह यह विनम्र लोगों के सिवा सब पर भारी है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 10
अंक - 10
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

05 रमज़ान , 1446 हिज्री कमरी, 06 अमान 1404 हिज्री शम्सी, 06 मार्च 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

अहमदियत के केंद्र (मर्कज़) में क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

जब हम इंसाफ की नज़र से देखते हैं, तो पूरे सिलसिला-ए-नबुव्वत में सबसे ऊँचे दर्जे के जांबाज नबी, जीवित नबी और अल्लाह के सबसे प्रिय नबी को केवल एक ही शख़्स के रूप में पहचानते हैं—वही नबियों के सरदार, रसूलों का फख्र, तमाम मुरसिलों का सर्ताज, जिनका नाम मुहम्मद मुस्तफा व अहमद मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है। जिनकी छत्रछाया में दस दिन चलने से वह रोशनी मिलती है, जो पहले हज़ारों वर्षों तक नहीं मिल सकती थी।

(इरशादाते आलिया सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा है कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी माहूद हूँ जिसकी आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने की थी, और अब कोई मसीह आसमान से नहीं आएगा, कोई महदी नहीं आएगा। वे सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पहचान के तौर पर बताई थीं। आपने दुनिया को, खासकर मुसलमानों को, यह दावत दी कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों को देखो, उन पर गौर करो और समझो कि इसी में सआदत है, इसी में अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों की तामील है।

अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत को अक़्ल और विवेक दे और वे बेवजह की मुखालेफ़त से बाज़ आएं। सोचें कि क्या अल्लाह उनसे नहीं पूछेगा कि तुमने बिना तहक़ीक़ के मुखालेफ़त क्यों की? क्योंकि अक्सर लोग बिना तहक़ीक़ किए सिर्फ़ मौलवियों की बातों पर विरोध करने लगते हैं। कुछ तो ग़ौर करो, अल्लाह तआला मुसलमानों को अक़्ल दे।

अल्लाह की तौहीद को दुनिया में क़ायम करने के लिए हमें वही कोशिश करनी चाहिए, जिसका हमसे तक़ाज़ा किया गया है और जो उसका हक़ है। हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए। अल्लाह की तौहीद को क़ायम करने के लिए हर समय हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहें और तब तक चैन से न बैठें जब तक इस मक़सद को पूरा न कर लें, जिसके लिए हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हुए हैं।

अल्लाह तआला क़ादियान में जलसे में शामिल होने वाले हर शख़्स को अपनी हिफ़ाज़त और अमान में रखे। उन्हें हक़ीक़ी इस्लामी तालीम पर अमल करने और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इश्क़ और मोहब्बत का इज़हार करने की तौफ़ीक़ दे। वे अपनी बैअत का हक़ अदा करने वाले बनें और उन तमाम बरकतों को लेकर लौटें, जिनके लिए वे इस जलसे में शामिल हुए हैं।

अहमदियत के केंद्र क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

शेष पृष्ठ 07 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ! मैं लोगों से नहीं डरता था, लेकिन जब मैंने आपको देखा तो मेरी समझ जाती रही और मेरा दिल कमज़ोर हो गया। फिर मुझे अपने उस इरादे का अहसास हुआ, जो मेरा दृढ़ संकल्प था, जिसके बारे में कई घुड़सवार प्रयास कर चुके थे, परंतु कोई सफल नहीं हुआ। मैंने जान लिया कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सुरक्षा की गई है और निःसंदेह आप सत्य पर हैं। (एक हमलावर की खुली स्वीकारोक्ति)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अम्र बिन उमैया और सलमा बिन असलम को अबू सुफ़यान बिन हरब की ओर भेजा और फ़रमाया कि अगर तुम दोनों उसे बेख़बरी की हालत में पाओ तो उसे क़त्ल कर देना।

सरिय्या अब्दुल्लाह बिन रवाहा की उसैर बिन रज़ाम की ओर भेजे जाने और सरिय्या अम्र बिन उमैया ज़ुमरी के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का वर्णन।

श्रीमान शेख मुबारक अहमद साहिब (नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया रबवा), श्रीमान मुहम्मद मुनीर इदलेबी साहिब (आफ शाम) और श्रीमान अब्दुल बारी तारिक साहिब (इंचार्ज कंप्यूटर सेक्शन वक्फे जदीद रबवा) का ज़िक्रे-खैर और नमाज़ जनाज़ा गायब।

अल्लाह तआला के फज़ल से वक्फ़ को शेख मुबारक साहिब ने बखूबी निभाया है। मैंने भी देखा है, जब मैं भी अंजुमन में था तो उन्होंने मेरे साथ भी काम किया है। हमेशा धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने की एक मिसाल थे

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

शेष भाग

अब मैं कुछ दिवंगत व्यक्तियों का ज़िक्र करूंगा और बाद में जनाज़ा-ए-ग़ायब पढ़ाऊंगा।

सबसे पहले ज़िक्र है श्रीमान शेख़ मुबारक अहमद साहिब का। वह रबवाह में सदर अंजुमन अहमदिया के नाज़िर दीवान थे

वह 11 जनवरी को 77 वर्ष की उम्र में वफात पा गए

"इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।"

मरहूम मूसी थे, पैदाइशी अहमदी थे, और उनके दादा शेख़ मुहम्मद दीन साहिब ने 1938 में बैअत की थी। उनका ताल्लुक कथा नंगल, तहसील बटाला, ज़िला गुरदासपुर से था।

शेख़ मुबारक साहिब ने बी.ए., बी.एड. की शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1966 से 1981 तक लगभग 15 वर्षों तक शिक्षक के रूप में तालीम-उल्-इस्लाम हाई स्कूल में सेवा दी।

1973 में जब स्कूलों का राष्ट्रीयकरण (नेशनलाइज़) हुआ, तो उन्होंने कुछ अन्य सरकारी स्कूलों में भी सेवा दी और पढ़ाने के कर्तव्य निभाए। कुल मिलाकर 40 वर्षों तक उन्होंने जमाअत की सेवा की।

खलीफा-ए-मसीह Iसालिस रहमहुल्लाह की सेवा में उन्होंने वक़्फ़ की पेशकश की।

1982 में उनका वक़्फ़ क़ुबूल किया गया और खलीफा-ए-मसीह राबे रहमहुल्लाह ने सौ साल की जुबली के मौके पर उन्हें नायब वकील के रूप में नियुक्त किया।

इसके बाद वे नायब वकील-उल्-माल, एडिशनल नाज़िर बैत-उल्-माल (सदर अंजुमन अहमदिया), नाज़िर बैत-उल्-माल, नाज़िर दीवान, और नाज़िर रिश्ता-नाता के रूप में भी सेवा करते रहे।

इसके अलावा ज़ेली तंज़ीमों में अंसारुल्लाह में विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे और ख़ुद्दाम-उल-अहमदिया में भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं।

हसन महमूद साहिब, जो उनके भांजे और दामाद हैं और एक मुर्बी (धार्मिक शिक्षक) हैं, वे कहते हैं कि वे हमेशा यह कहा करते थे:

"ख़िलाफ़त के साथ इख़लास और वफ़ा का रिश्ता रखना चाहिए और माली मामलों में दख़ल नहीं देना चाहिए।"

यह वे हमेशा मुर्बियों को नसीहत किया करते थे।

वे नमाज़ों का विशेष ध्यान रखते। अंतिम उम्र तक मस्जिद जाकर ही नमाज़ अदा करने की कोशिश करते। वे हमेशा जमाअती और निजी महफिलों में ख़िलाफ़त से जुड़ने की ताकीद करते और अक्सर यह दुआ करते कि अल्लाह तआला मेरी औलाद को भी ख़िलाफ़त से जोड़े रखे।

वे कहा करते थे, "मैं हर बात खलीफ़ा-ए-मसीह को लिखता हूं, कुछ भी छुपाता नहीं हूं। अगर मुझसे गलती हो जाए, तो भी लिख देता हूं, ताकि उसकी इस्लाह हो जाए और मुझे फायदा हो।"

अल्लाह तआला के फज़ल से उन्होंने वक़्फ़ को पूरी तरह निभाया

मैंने भी उन्हें करीब से देखा है। जब मैं अंजुमन में था, तो उन्होंने मेरे साथ भी काम किया। वे हमेशा "दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने की मिसाल" रहे।

वे सादगी से रहते थे, साधारण जीवन व्यतीत करते थे और अपने समय का पूरा इस्तेमाल जमाअत की सेवा में करते थे।

अक्सर यह होता था कि उन्होंने किसी जगह दौरा किया, वापस आए, फिर कार्यालय का काम किया और शाम को एक और दौरे पर निकल गए। उनकी हमेशा यही कोशिश रहती थी कि "मुझे सेवा का अधिक से अधिक मौका मिले।"

उनके बच्चों ने कभी अगर उन्हें आराम करने की सलाह दी, तो उन्होंने कहा:

"मेरी रिटायरमेंट मेरी वफात (मृत्यु) पर ही होगी।"

दूसरा वर्णन श्रीमान मुहम्मद मुनीर इदलबी साहब

वे हाल ही में 76 वर्ष की उम्र में निधन कर गए। इन्ना लिल्लाहि वा इन्ना इलैहि राजिऊन।

उनके तीन बेटे और एक बेटी हैं, जो सभी क़तर में रहते हैं।

मुस्लिम दरूबी साहब कहते हैं:

"इदलबी साहब के माध्यम से ही मैंने और मेरे भाई ने अहमदियत स्वीकार की। वे एक सक्रिय प्रचारक, वक्ता, विद्वान और अहमदियत के प्रचार-प्रसार से संबंधित पुस्तकों के लेखक थे। उन्होंने 1984 की शुरुआत में बैअत की। जब उन्होंने हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे (रहमतुल्लाह अलैहि) से मुलाकात की, तो फिर वे लंबे समय तक लंदन में रहे और 'लिक़ा म'अल-अरब' समेत कई कार्यक्रमों का अनुवाद भी किया।"

उन्होंने दस से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से सात अहमदियत के प्रचार से

संबंधित लेखों पर आधारित थीं।

वे देर से अहमदियत में आए, लेकिन बहुत काम कर गए। उन्होंने शाम (सीरिया) में अहमदियत जमाअत में सेक्रेटरी तबलीग़ और सेक्रेटरी तालीम व तरबियत के रूप में सेवा की। उनके माध्यम से दर्जनों लोगों ने अहमदियत को स्वीकार किया।

हौश अरब की बस्ती में अहमदियत उनके माध्यम से पहुंची

इसी कारण अहमदियत विरोधियों ने एक बार उनकी कार को भी जला दिया था।

उनके वाद-विवाद (मुनाज़रों) और प्रचार बैठकों के कारण प्रशासन को शिकायतें मिलीं, जिसके कारण हौश अरब के कुछ लोगों सहित उन्हें 1989 में पूर्व सरकार की जेलों में कई महीनों तक कैद रहना पड़ा।

जब सीरिया की स्थिति बिगड़ गई, तो वे अपने बच्चों के साथ क़तर चले गए।

सीरिया के जमाअत अध्यक्ष वसीम साहब लिखते हैं :

"इदलबी साहब ने कई किताबें लिखीं, जिनसे अहमदियत पुस्तकालय समृद्ध हुआ।

उन्होंने अहमदियत की शिक्षाओं को सरल तरीके से स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया, जिससे कई लोगों ने अहमदियत को स्वीकार किया।"

बासिल इदलबी साहब कहते हैं:

"उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी अहमदियत की सेवा में लगा दी और वे खलीफ़त के सच्चे प्रेमी थे। हज़रत खलीफ़तुल मसीह IV रहमहुल्लाह के लिए उन्होंने अंग्रेज़ी से अरबी में अनुवाद किया। वे अहमदियत के एक सच्चे योद्धा थे।"

उन्होंने विभिन्न देशों की यात्रा की और अहमदियत का प्रचार किया

2013 में सीरिया के संकट के कारण वे क़तर स्थानांतरित हो गए। वहां वे फ़ेसबुक पर अहमदियत और ख़िलाफ़त के बारे में लिखते रहे और रुचि रखने वालों से संपर्क बनाए रखा।

वे एक प्रभावी वक्ता थे और क़ुरआन व सुन्नत से हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के संदेश की सच्चाई के बारे में ठोस प्रमाण प्रस्तुत किया करते थे।

उन्होंने ख़िलाफ़त की महानता और उसकी रक्षा में कई पुस्तकों का अनुवाद किया।

उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी अहमदियत के प्रचार और बचाव के लिए समर्पित कर दी।

अपनी मान्यताओं और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के संदेश की सच्चाई पर अपने दृढ़ विश्वास के कारण उन्हें अपने परिवार और दमिश्क (सीरिया) के समाज से कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

नज़ार अजीब साहब कहते हैं :

"मुझे इदलबी साहब के माध्यम से अहमदियत से परिचय हुआ। श्रीमान खालिद अज़्ज़ाम साहब ने कहीं से उनकी 'दज्जाल' पर लिखी किताब प्राप्त की। वह किताब मुझे बहुत पसंद आई और इसने मेरे सभी पूर्व विचारों को बदल दिया। इसके बाद मैंने उनकी किताब 'क़त्ल मुरतद' और फिर 'जिन्न' पर लिखी किताब पढ़ी। फिर मैंने उनसे फोन पर संपर्क किया। उसके बाद मैंने और खालिद अज़्ज़ाम साहब ने बैअत कर ली।

जब इदलबी साहब को पता चला, तो वे बहुत खुश हुए।"

डॉ. इमरान रहमान साहब, अध्यक्ष जमाअत कतर, कहते हैं

"वे अत्यंत विनम्र स्वभाव के थे और हमेशा जमाअत के प्रणाली से मजबूत संबंध बनाए रखते थे। ख़िलाफ़त के प्रति उनकी मोहब्बत और आज्ञाकारिता अत्यंत असाधारण थी। वे एमटीए के माध्यम से यहाँ के खुत्बात (ख़ुत्बे) सुनते और मेरे अन्य कार्यक्रम भी देखते थे तथा इसका बार-बार उल्लेख करते थे। वे आर्थिक क़ुर्बानी में सबसे आगे रहते थे। इस बात को सुनिश्चित करते कि उनका चंदा सबसे पहले अदा हो।"

"वे कहते हैं कि निधन से कुछ दिन पहले भी उन्होंने मुझे, मुर्बी साहब और सचिव माल को अपने घर बुलाया और कहा कि 'वक़्फ़-ए-नौ' का चंदा अदा करना है, वह आकर ले लें।' ग़लत रिपोर्टों की वजह से उन्हें वहाँ के सुरक्षा अधिकारियों ने तलब किया, लेकिन बाद में छोड़ दिया।"

इसके बाद, किसी ने उनके बारे में लिखा है:

"उन्हें सीरिया के टेलीविजन कार्यक्रमों में कई बार आमंत्रित किया गया, जहाँ उन्होंने इस्लाम में मुरतद (धर्म-त्यागी) की सज़ा की मनाही के विषय पर प्रतिष्ठित उलेमा से बहस की। इस पर उन्हें जान से मारने की धमकियाँ भी मिलीं, जिनमें से कुछ ऑनलाइन प्रकाशित भी हुईं।"

"वे एक फ़ेसबुक पेज भी चलाते थे, जहाँ हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की लिखाई हुई शिक्षाओं से उद्धरण साझा किए जाते थे, जिसे अहमदी और ग़ैर-अहमदी दोनों पढ़ते और अनुसरण करते थे। उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी, अपनी अंतिम सांस तक, अपने क़लम और शब्दों के साथ डटे रहकर बिताई। उनकी मुख्य चिंता हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का संदेश पहुँचाना और दुनिया में अल्लाह का सच्चा धर्म फैलाना था।"

"जहाँ भी उन्हें अवसर मिलता, वे चर्चा को अहमदियत और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की सच्चाई की ओर मोड़ने का कोई मौक़ा नहीं गंवाते थे। अल्लाह तआला उन पर अपनी रहमत और मग़फ़िरत फरमाए, उनके बच्चों को नेकियों पर क़ायम रखे और उनके दर्ज़े बुलंद करे।"

तीसरा ज़िक्र

अब्दुल बारी तारिक साहब वे कंप्यूटर सेक्शन, वक़्फ़-ए-जदीद रबवा के इंचार्ज थे और हाल ही में उनका निधन हो गया।

इन्ना लिल्लाहि वा इन्ना इलैहि राजिऊन।

वक़्फ़-ए-जदीद के अध्यक्ष लिखते हैं:

अहमदियत का प्रभाव उनके परदादा, श्रीमान चौधरी मुहम्मद यार साहब (निवासी घटीआलियां, ज़िला सियालकोट) के माध्यम से हुआ। उन्होंने 1903 में एक पत्र के माध्यम से बैअत कर अहमदियत स्वीकार की।"

"मरहूम के दादा, चौधरी ग़ुलाम क़ादिर साहब, जन्मजात अहमदी थे। उन्होंने एमएससी (कंप्यूटर साइंस) की शिक्षा प्राप्त की और फिर कराची में नौकरी की। बाद में उन्हें कैंसर की बीमारी हो गई, जिससे वे स्वस्थ हुए, लेकिन कुछ समय बाद कैंसर दोबारा उभर आया।

"उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह IV रहमहुल्लाह की सेवा में पत्र लिखा। उन्होंने उन्हें होम्योपैथिक दवा भिजवाई और अन्य इलाज करने की भी सलाह दी। इसके साथ ही, उन्होंने वक़्फ़ (अपनी ज़िंदगी समर्पित करने) की इच्छा व्यक्त की, जिसे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह IV रहमहुल्लाह ने स्वीकार किया और उन्हें तहरीक-ए-जदीद में भेज दिया।"

बाद में, उनकी नियुक्ति वक़्फ़-ए-जदीद में हो गई।

उन्होंने न केवल सभी कार्यालयों को कंप्यूटराइज किया, बल्कि अन्य अहमदी संस्थानों में भी आईटी का कार्य किया।

विदेशी सेवाए "उन्होंने पाकिस्तान से बाहर भी अहमदी अस्पतालों को कंप्यूटराइज किया। नाइजीरिया और बेनिन के अहमदी अस्पतालों के सिस्टम को आधुनिक बनाने की ज़िम्मेदारी भी निभाई। कानो (नाइजीरिया) के डॉक्टर ने लिखा कि जब हमने कंप्यूटर सिस्टम लागू करने की योजना बनाई, तो लाखों रुपये का ख़र्च बताया गया। यहाँ तक कि सस्ता समाधान भी हज़ारों डॉलर में था। लेकिन जब अब्दुल बारी साहब वहाँ आए और एक महीने तक काम किया, तो बहुत ही कम लागत में पूरा सिस्टम बना दिया।"

उनके परिवार में उनकी माता, पत्नी, एक बेटा, पाँच भाई और बहनें शामिल हैं।

उनका वक़्फ़ (जीवन समर्पण):

"उन्होंने यह वचन लिया था कि यदि वे स्वस्थ हो गए, तो अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ कर देंगे। जब वे ठीक हुए, तो 21 साल तक बिना किसी स्वार्थ के कार्य किया। उन्होंने न दिन देखा, न रात, और वाक़ेफ़ीन-ए-ज़िंदगी के लिए एक मिसाल क़ायम की, जो उनके लिए भी अनुकरणीय है।"

अंसारुल्लाह केंद्रीय समिति में सेवा:

"वे अंसारुल्लाह के केंद्रीय संगठन में एक क़ायद (नेता) के रूप में काम कर रहे थे। जब वे वहाँ जाने के लिए तैयार हो रहे थे, तो उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनका निधन हो गया।"

डॉ. सुल्तान साहब, अध्यक्ष अंसारुल्लाह, कहते हैं:

"वे संगठन, जमाअत और ख़िलाफ़त के बहुत वफ़ादार व्यक्ति थे। उन्होंने अपने वक़्फ़ को पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाया। वे ख़िदमत-ए-दीन (धर्म की सेवा) में संलग्न रहकर ही संतोष महसूस करते थे। किसी ने उनसे कहा कि आप लोगों के लिए काम करते हैं, तो उसका मेहनताना लिया करें।"

"उन्होंने उत्तर दिया: 'मैं एक वाक़ेफ़-ए-ज़िंदगी हूँ। मेरा इनाम अल्लाह के पास है।

"उन्होंने वक़्फ़ की ज़िम्मेदारियों को पूरी तरह से निभाया। वे वक़्फ़ की बरकतों पर पूर्ण विश्वास रखते थे और अपनी अंतिम सांस तक सेवा करते रहे। अल्लाह तआला उन पर रहमत और मग़फ़िरत की बारिश करे।"

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

"ज़ुल्म की शुरुआत काफ़िरों की तरफ़ से हुई थी, जिन्होंने बिना किसी जायज़ वजह के सिर्फ़ इस्लाम की दुश्मनी में बेकसूर मुसलमानों के साथ ज़ालिमाना और वहशियाना सुलूक किया, और जो कुछ उनकी सज़ा में किया गया, वह सिर्फ़ क़िसासी औरजवाबी था। (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

उरनीइयों का यह क़िस्सा हदूद का हुक्म उतरने से पहले पेश आया था। इसके बाद आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जिस भी लश्कर को भेजा, उन्हें मुश्ले से मना फ़रमाया, और इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सदक़े की तरग़ीब देते थे और मुश्ले से रोकते थे।

अगर सारे हालात को सामने रखकर ग़ौर किया जाए, तो इस मामले में इस्लाम का दामन बिल्कुल पाक नज़र आता है, क्योंकि दरअसल यह फ़ैसला इस्लाम का नहीं था, बल्कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का था, जिनकी शरीअत को हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम नासिरी ने मंसूख नहीं किया, बल्कि बरक़रार रखा। (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

सरिय्या कुर्ज़ बिन जाबिर और ग़ज़वा ज़ी क़रद के तनाज़ुर में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बयान।"

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दौर के सराया का ज़िक्र हो रहा है। आज इस सिलसिले में सबसे पहले

सरिय्या कुर्ज़ बिन जाबिर का ज़िक्र करूंगा। यह सरिय्या शव्वाल 6 हिजरी में उरनीइयों की तरफ़ भेजा गया था।

(तबक़ातुल कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 71, दारुल कुतुब अल्-इल्मिय्या, बैरूत)

कुछ के अनुसार यह सरिय्या सईद बिन ज़ैद का था, लेकिन अधिकतर राय यही है कि यह सरिय्या कुर्ज़ बिन जाबिर का था। एक मत यह भी है कि यह जरीर बिन अब्दुल्लाह का था, लेकिन इस मत का खंडन किया गया है, क्योंकि जरीर बिन अब्दुल्लाह इस सरिय्या के चार साल बाद इस्लाम में दाख़िल हुए थे।

(सीरतुल हल्बिया, भाग 3, पृष्ठ 260, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत)

इस सरिय्या का कारण यह सरिय्या इसलिए हुआ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कुछ लोग आए। सहीह बुख़ारी (किताबुल जिहाद व किताबुद-दियात) में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वे आठ आदमी कबीला अुक्ल और उरैना से थे। इब्ने जरीर और अबू अवाना के अनुसार उनमें से चार उरैना से थे और तीन अुक्ल से थे, जबकि आठवां आदमी इन दोनों क़बीलों से नहीं था, उसका नसब (वंश) मालूम नहीं।

वे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और इस्लाम के बारे में बातचीत की। एक रिवायत के मुताबिक उन्होंने इस्लाम पर बैअत (शपथ) कर ली, लेकिन वे बीमार थे। अबू अवाना ने बयान किया कि वे बहुत कमज़ोर थे, उनका रंग बेहद पीला पड़ चुका था, उनके पेट फूले हुए थे। उन्होंने कहा: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हमें पनाह दें और हमें खाना खिलाएं।" वे मस्जिदे नबवी के चबूतरे पर ठहरे हुए थे।

जब उनकी तबीयत कुछ संभली, तो उन्हें लगा कि मदीना की आब-ओ-हवा उनके लिए मुफ़ीद नहीं। भले ही भुखमरी के कारण हुई बीमारी और कमज़ोरी दूर हो गई थी, लेकिन दूसरी बीमारियां घेरने लगीं। इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक, उन्होंने मदीना की हवा को अपने लिए नुक़सानदेह पाया और और भी कमज़ोर हो गए। एक और रिवायत के अनुसार उन दिनों मदीना में "बरसाम" नामक एक बीमारी फैली थी, जो दिमाग़ पर असर डालती थी और सिर व सीने में सूजन पैदा कर देती थी।

वे कहने लगे, "यह बीमारी हमें लग गई है और मदीना की आब-ओ-हवा हमारे लिए सही नहीं है। हम मवेशी पालने वाले लोग हैं, खेती-बाड़ी करने वाले नहीं। हमारे लिए दूध का इंतेज़ाम कर दें।"

इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मेरे पास कुछ और नहीं, लेकिन तुम दूध देने वाली ऊंटनियों के पास चले जाओ।"

एक रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें फ़ैफ़ाउल-ख़बार नामक जगह के चरवाहों के पास जाने का हुक्म दिया। यह जगह मदीना के क़रीब एक वीरान इलाक़ा था।

इस रिवायत से ऐसा लगता है कि वे ज़्यादा अरसा मदीना में नहीं रहे, बल्कि जल्द ही वहां से बाहर चले गए और ऊंटनियों का दूध पीकर उनकी सेहत भी बेहतर हो गई।

एक और रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें ज़कात की ऊंटनियों के पास जाने की इजाज़त दी, ताकि वे उनका दूध पी सकें। सो वे ऊंटों के पास गए और उनका दूध पिया।"

"जब वे तंदुरुस्त हो गए और उनके शरीर अपनी पुरानी हालत पर लौट आए, उनके पेट छोटे हो गए, तो वे इस्लाम लाने के बाद फिर से काफिर हो गए और दूध देने वाली ऊंटनियों को हांककर ले गए।

एक तरफ़ तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह रहमत और शफ़क़त थी, और दूसरी तरफ़ उनका यह रवैया कि ठीक होते ही उन्होंने धोखा दिया। बताया जाता है कि जब वे काफिर होकर ऊंटनियों को लेकर भागे, तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए गए ग़ुलाम यसार और उनके कुछ साथियों ने उन्हें पकड़ लिया। मुसलमानों ने उन्हें चुनौती दी। जब वे पकड़े गए, तो उन्होंने लड़ाई की और मुकाबला किया। वे लोग जो ऊंटनियां चोरी करके ले गए थे, उन्होंने मुसलमानों को भी क़त्ल कर दिया, जो उन ऊंटों की देखरेख कर रहे थे।

फिर वे चरवाहों की ओर बढ़े और सबसे पहले यसार को क़त्ल किया। उन्होंने यसार के हाथ-पैर काट दिए और उनकी ज़बान व आंखों में कांटे चुभो दिए, यहां तक कि वे शहीद हो गए। फिर बाकी चरवाहों को भी मार दिया।

एक आदमी नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में पहुंचा और उसने बताया कि "उन्होंने मेरे साथी को क़त्ल कर दिया है।" एक व्यक्ति उनमें से बच गया था, जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा और बताया कि वे लोग ऊंटों को लेकर भाग गए हैं।

मुहम्मद बिन उमर की रिवायत के मुताबिक, बनू अम्र बिन औफ़ की एक औरत अपने गधे पर सवार होकर वहां से गुज़री, जहां यसार पेड़ के नीचे पड़े हुए थे। जब वह उनके पास पहुंची, तो देखा कि वे शहीद हो चुके हैं। वह वापस अपनी क़ौम की तरफ़ लौटी और उन्हें इस घटना की ख़बर दी। फिर लोग वहां पहुंचे और यसार के पार्थिव शरीर को उठाकर क़ुबा ले आए।

सहीह मुस्लिम की रिवायत के मुताबिक, उस वक़्त नबी सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम के पास अंसार के बीस नौजवान मौजूद थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें उन काफ़िरों का पीछा करने के लिए भेजा। एक दूसरी रिवायत में है कि आपने उनके क़दमों के निशान देखकर बीस घुड़सवार भेजे। जब आपको इस घटना की ख़बर मिली, तो आपने उनके पीछे लोगों को रवाना किया। इन लोगों में कुछ नाम दर्ज हैं, जैसे:

सलमा बिन अक़्वा अबू रहम अबू ज़र ग़िफ़ारी बुरैदा बिन हुसैब राफ़े बिन मकीथ और उनके भाई जुंदुब बिलाल बिन हारिस अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन औफ़ मुनज़र जुअल बिन सुराक़ा साअलबी सुवैद बिन सख़्र जुहनी ये सभी मुहाजिरीन में से थे, और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुर्ज़ बिन जाबिर फ़िहरी को इनका अमीर बनाया। आपने उनके साथ एक जासूस (खोजी) को भी भेजा, जो दुश्मनों के निशान तलाश कर सके।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन दुश्मनों पर बद्दुआ की और कहा : "हे अल्लाह! इन्हें रास्ते से भटका दे और इनके लिए ऊंट की खाल से भी तंग जगह बना दे।"

अल्लाह ने उनकी राह बंद कर दी, और वे उसी दिन पकड़ लिए गए। जब दिन चढ़ा, तो उन्हें नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास लाया गया।

एक और रिवायत में है कि कुर्ज़ बिन जाबिर और उनके साथी उनकी तलाश में निकले, यहां तक कि रात हो गई। वे हर्रा नामक जगह पर रुके। सुबह जब वे आगे बढ़े, तो यह नहीं जानते थे कि दुश्मन किस ओर गए हैं। तभी उन्होंने एक औरत को

ऊंट का कंधा उठाए हुए देखा।

उन्होंने उससे पूछा, "यह क्या है?"

औरत ने कहा, "मैं एक क़ौम के पास से गुज़री हूं, उन्होंने ऊंट ज़बह किया था।

उन्होंने मुझे यह कंधा दिया।" उसे ऊंट के मांस का एक टुकड़ा भी दिया गया था।

फिर उसने कहा, "जब तुम उन्हें देखोगे तो उनका धुआं उठता हुआ नज़र आएगा, जहां वे ठहरे हुए हैं।"

फिर सहाबा चल पड़े यहाँ तक कि वे उनके पास उस समय पहुँचे जब वे खाने से फारिग हो चुके थे। सहाबा ने उनसे आत्मसमर्पण करने की माँग की, तो सभी क़ैदी हो गए और उनमें से कोई भी बचा नहीं। फिर सहाबा ने उन्हें बाँध लिया और उन्हें अपने पीछे घोड़ों पर बिठाकर मदीना ले आए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रिघाबा नामक स्थान पर तशरीफ फरमा थे। यह रिघाबा जुर्फ़ के पास एक जगह है और जुर्फ़ मदीना से तीन मील की दूरी पर था। बहरहाल, वे उन्हें लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर चले। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं उनके पीछे कुछ लड़कों के साथ निकला, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें वादी रिघाबा में पानी के बहाव के इकट्ठा होने की जगह पर मिले।

तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सलाइयाँ लाने का हुक्म दिया। उन्हें गर्म किया गया, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन सलाइयों को उनकी आँखों में फेरा क्योंकि उन्होंने चरवाहों की आँखों में सलाइयाँ फेरी थीं। एक रिवायत में आता है कि उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास लाया गया, तो आपने उनके एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पैर काट दिए और उनकी आँखों में गर्म सलाइयाँ फेरकर उन्हें धूप में डाल दिया, यहाँ तक कि वे मर गए।

एक और रिवायत में आता है कि उनकी आँखों में गर्म सलाइयाँ फेरी गईं और उन्हें धूप में छोड़ दिया गया। वे पानी माँगते थे, लेकिन उन्हें पानी नहीं दिया जाता था।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैंने उनमें से एक को देखा कि वह प्यास की वजह से अपनी ज़ुबान से अपने मुँह को चाट रहा था ताकि उसे कुछ ठंडक मिले, लेकिन वह तेज़ गर्मी और धूप की वजह से परेशान था, यहाँ तक कि वे मर गए और उनके ज़ख़्मों से खून बहना नहीं रोका गया, उनका इलाज नहीं किया गया।

अबू क़िलाबा ने बयान किया है कि यही लोग थे जिन्होंने क़त्ल भी किया, चोरी भी की और इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो गए और अल्लाह तआला और उसके रसूल से जंग की।

इब्न सीरीन वर्णन करते हैं कि उरनीयीन का यह क़िस्सा हद के हुक्म के नाज़िल होने से पहले हुआ था। बहरहाल, यह सब कुछ हुआ। ज़ाहिर तौर पर लगता है कि मुसलमानों ने बड़ा ज़ुल्म किया, लेकिन जो इस्लामी तालीम बाद में नाज़िल हुई, वह यह थी कि अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई :

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيۡنَ يُحَارِبُوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ وَيَسۡعَوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ فَسَادًا اَنۡ يُّقَتَّلُوۡۤا
اَوۡ يُصَلَّبُوۡۤا اَوۡ تُقَطَّعَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَاَرۡجُلُهُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ اَوۡ يُنۡفَوۡا مِنَ الۡاَرۡضِ ذٰلِكَ لَهُمۡ
خِزۡىٌ فِى الدُّنۡيَا وَلَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ

"इन्नमा जज़ा'उल्लज़ीना युहारिबून अल्लाहा व रसूलहु व यसअव्न फ़िल अर्दि फ़सादा अन युक़त्तलू अव युसल्लबू अव तुक़त्तअ अयदीहिम व अर्जुलुहुम मिन ख़िलाफ़िन अव युनफ़ौ मिनल अर्द। ज़ालिका लहुम ख़िज्युन फ़िद्दुन्या व लहुम फ़िल आख़िरति अज़ाबुन अज़ीम।" (अल्-मायदा : 34)

अर्थात् जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में फ़साद फैलाने की कोशिश करते हैं, उनकी सज़ा यह है कि उन्हें सख्ती से क़त्ल किया जाए, या फांसी दी जाए, या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशाओं से काट दिए जाएँ, या उन्हें देश निकाला दे दिया जाए। यह उनके लिए दुनिया में ज़िल्लत और रुसवाई का सामान है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब मुक़र्रर है।

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसी की आँख में सलाई नहीं फेरी, न ही किसी की ज़ुबान काटी, और न ही हाथ-पैर काटने से ज़्यादा कोई सज़ा दी।

इसके बाद आपने जिस भी लश्कर को भेजा, उन्हें मुस्लह (शरीर को विकृत करने) से मना फ़रमाया और फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सदक़े की तरग़ीब देते और मुस्लह से रोकते थे।

मुहम्मद बिन उमर वाक़िदी और इब्न साद बयान करते हैं कि पंद्रह ऊँटनियाँ थीं, जिन्हें वे चरागाह से ले गए थे।

(सबलुल् हुदा वल्-रिशाद, भाग 6, पृष्ठ 115 से 117, 122, दारुल कुतुब अल--इल्मिय्या, बैरूत)

(सहीह मुस्लिम, किताब अल्-क़सामा वल्-मुहारेबीन, बाब हुक्म अल-मुहारेबीन वल-मुर्तद्दीन, हदीस 3150, जिल्द 9, पृष्ठ 13, नूर फाउंडेशन)

(मुअजम अल्-बुलदान, डॉ. ग़ुलाम जिलानी बर्क, पृष्ठ 263)

(फरहंग सीरत, पृष्ठ 87, ज़वार अकैडमी, कराची)

बहरहाल यह दुश्मनों ने मुसलमानों के साथ किया था, इसलिए उनका बदला उन्हीं से उसी तरह लिया गया, जैसा उन्होंने किया था, और उन्हें वही सज़ा दी गई। लेकिन बाद में इस्लामी शिक्षा के अनुसार फिर कभी दुश्मनों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया गया।

हालाँकि यह इसका जवाब है, लेकिन इसका कुछ विस्तृत उत्तर और उन लोगों के आपत्तियों का भी उत्तर है, जो इस्लाम पर यह सवाल उठाते हैं कि दुश्मनों के साथ ऐसा कठोर व्यवहार क्यों किया गया। इसका बहुत अच्छा उत्तर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में दिया है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं:

"मुसलमानों के लिए यह दिन बहुत ख़तरनाक थे, क्योंकि क़ुरैश और यहूद की उकसावे की वजह से पूरा इलाक़ा दुश्मनी की आग में जल रहा था। और अपनी नई नीति के अनुसार उन्होंने यह भी तय किया था कि मदीना पर खुला हमला करने के बजाय गुप्त तरीकों से नुकसान पहुँचाया जाए। और चूँकि धोखा और ग़द्दारी अरब के जंगली क़बीलों के स्वभाव का हिस्सा थी, इसलिए वे हर जायज़ और नाजायज़ तरीक़ों से मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने की कोशिश में लगे हुए थे।

जिस घटना का हम अब ज़िक्र करने वाले हैं, वह भी इसी ग़द्दारी का एक हिस्सा थी, जो एक भयानक अंजाम तक पहुँची।"* फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं :

*"इसकी विस्तृत कहानी यह है कि शव्वाल 6 हिजरी में क़बीला उकल और उरैना के कुछ लोग, जो कुल मिलाकर आठ थे, मदीना आए और इस्लाम से मोहब्बत और अपनापन दिखाकर मुसलमान हो गए। कुछ समय रुकने के बाद उन्हें मदीना की आबोहवा में पाचन और तिल्ली से संबंधित कुछ परेशानी होने लगी। उन्होंने इसे बहाना बनाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर होकर अपनी तकलीफ बयान की और कहा 'हे रसूलुल्लाह! हम जंगल के लोग हैं, हमेशा जानवरों के साथ रहे हैं और शहर की ज़िंदगी के अभ्यस्त नहीं हैं,

इसलिए बीमार हो गए हैं।'

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया 'अगर तुम्हें मदीना में तकलीफ हो रही है, तो शहर के बाहर उस स्थान पर चले जाओ, जहाँ हमारे मवेशी रहते हैं।' आपने मेहमाननवाज़ी और दयालुता दिखाई और कहा— 'वहाँ ऊंटों का दूध वगैरह पियो, तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी।'"

एक रिवायत में यह है कि उन्होंने खुद कहा 'हे रसूलुल्लाह! अगर आप हमें अनुमति दें, तो हम मदीना से बाहर उस जगह चले जाएँ, जहाँ आपके ऊंट रहते हैं।' इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इजाज़त दे दी।

बहरहाल, वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अनुमति लेकर मदीना के बाहर उस चरागाह में चले गए, जहाँ मुसलमानों के ऊंट रहते थे।

जब इन बदनसीबों ने वहाँ अपना डेरा जमा लिया और आसपास के हालात का जायज़ा ले लिया, और खुले वातावरण में रहकर ऊंटों का दूध पीकर स्वस्थ हो गए, तो उन्होंने अचानक ऊंटों के रखवालों पर हमला कर दिया। उन्होंने उन्हें इतनी बेरहमी से मारा कि पहले तो जानवरों की तरह ज़िबह (गला काटना) किया, और जब उनमें कुछ जान बाकी थी, तो उनकी ज़बानों में रेगिस्तान के नुकीले काँटे चुभो दिए, ताकि जब वे दर्द से चीखें या प्यास की वजह से छटपटाएँ, तो उनकी तकलीफ़ और बढ़ जाए।

इसके बाद भी वे नहीं रुके, बल्कि गर्म सलाइयाँ (लौहे की छड़ें) लेकर इन घायल मुसलमानों की आँखों में घुसेड़ दीं। इस तरह ये बेगुनाह मुसलमान खुले मैदान में तड़प-तड़प कर शहीद हो गए।

इन शहीदों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक ख़ास सेवक यसर रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ऊंटों की देखभाल किया करते थे।

जब ये दरिंदे इस वहशियाना (निर्दयी) तरीके से मुसलमानों को शहीद कर चुके, तो उन्होंने सभी ऊंटों को इकट्ठा किया और उन्हें हाँक कर ले जाने लगे।

लेकिन एक ऊंटों का रखवाला किसी तरह बच निकला और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस घटना की ख़बर दी। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत बीस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक टुकड़ी तैयार की और उनके पीछे भेजा।

हालाँकि ये लोग काफी दूरी तय कर चुके थे, लेकिन अल्लाह का करम हुआ कि मुसलमान जल्दी पीछा कर सके और उन्हें पकड़ लिया। फिर उन्हें रस्सियों से बाँधकर वापस मदीना ले आए।

उस वक़्त तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर यह आदेश (हुक्म) नाज़िल नहीं हुए थे कि अगर कोई व्यक्ति इस तरह की ग़द्दारी करे, तो उसके साथ क्या सलूक किया जाए।

इसलिए, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पुराने सिद्धांत के अनुसार 'जब तक इस्लाम में कोई नया हुक्म न आए, तब तक यहूदी शरीअत (मूसा की शरीअत) के अनुसार फ़ैसला किया जाए'— इस आधार पर, मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत के अनुसार आदेश दिया कि इन ज़ालिमों को उसी तरह सज़ा दी जाए, जिस तरह उन्होंने मुसलमान रखवालों के साथ किया था।'

बहरहाल यह दुश्मनों ने मुसलमानों के साथ किया था, इसलिए उनका बदला उन्हीं से उसी तरह लिया गया, जैसा उन्होंने किया था, और उन्हें वही सज़ा दी गई। लेकिन बाद में इस्लामी शिक्षा के अनुसार फिर कभी दुश्मनों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया गया।

हालाँकि यह इसका जवाब है, लेकिन इसका कुछ विस्तृत उत्तर और उन लोगों के आपत्तियों का भी उत्तर है, जो इस्लाम पर यह सवाल उठाते हैं कि दुश्मनों के साथ ऐसा कठोर व्यवहार क्यों किया गया। इसका बहुत अच्छा उत्तर हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में दिया है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं : "मुसलमानों के लिए यह दिन बहुत ख़तरनाक थे, क्योंकि क़ुरैश और यहूद की उकसावे की वजह से पूरा इलाक़ा दुश्मनी की आग में जल रहा था। और अपनी नई नीति के अनुसार उन्होंने यह भी तय किया था कि मदीना पर खुला हमला करने के बजाय गुप्त तरीकों से नुकसान पहुँचाया जाए। और चूँकि धोखा और ग़द्दारी अरब के जंगली क़बीलों के स्वभाव का हिस्सा थी, इसलिए वे हर जायज़ और नाजायज़ तरीक़ों से मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने की कोशिश में लगे हुए थे।

जिस घटना का हम अब ज़िक्र करने वाले हैं, वह भी इसी ग़द्दारी का एक हिस्सा थी, जो एक भयानक अंजाम तक पहुँची।"* फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं :

*"इसकी विस्तृत कहानी यह है कि शव्वाल 6 हिजरी में क़बीला उकल और उरैना के कुछ लोग, जो कुल मिलाकर आठ थे, मदीना आए और इस्लाम से मोहब्बत और अपनापन दिखाकर मुसलमान हो गए। कुछ समय रुकने के बाद उन्हें मदीना की आबोहवा में पाचन और तिल्ली से संबंधित कुछ परेशानी होने लगी। उन्होंने इसे बहाना बनाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर होकर अपनी तकलीफ बयान की और कहा 'हे रसूलुल्लाह! हम जंगल के लोग हैं, हमेशा जानवरों के साथ रहे हैं और शहर की ज़िंदगी के अभ्यस्त नहीं हैं, इसलिए बीमार हो गए हैं।'

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया 'अगर तुम्हें मदीना में तकलीफ हो रही है, तो शहर के बाहर उस स्थान पर चले जाओ, जहाँ हमारे मवेशी रहते हैं।' आपने मेहमाननवाज़ी और दयालुता दिखाई और कहा— 'वहाँ ऊंटों का दूध वगैरह पियो, तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी।'"

एक रिवायत में यह है कि उन्होंने खुद कहा 'हे रसूलुल्लाह! अगर आप हमें अनुमति दें, तो हम मदीना से बाहर उस जगह चले जाएँ, जहाँ आपके ऊंट रहते हैं।' इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इजाज़त दे दी।

बहरहाल, वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अनुमति लेकर मदीना के बाहर उस चरागाह में चले गए, जहाँ मुसलमानों के ऊंट रहते थे।

जब इन बदनसीबों ने वहाँ अपना डेरा जमा लिया और आसपास के हालात का जायज़ा ले लिया, और खुले वातावरण में रहकर ऊंटों का दूध पीकर स्वस्थ हो गए, तो उन्होंने अचानक ऊंटों के रखवालों पर हमला कर दिया। उन्होंने उन्हें इतनी बेरहमी से मारा कि पहले तो जानवरों की तरह ज़िबह (गला काटना) किया, और जब उनमें कुछ जान बाकी थी, तो उनकी ज़बानों में रेगिस्तान के नुकीले काँटे चुभो दिए, ताकि जब वे दर्द से चीखें या प्यास की वजह से छटपटाएँ, तो उनकी तकलीफ़ और बढ़ जाए।

इसके बाद भी वे नहीं रुके, बल्कि गर्म सलाइयाँ (लौहे की छड़ें) लेकर इन घायल मुसलमानों की आँखों में घुसेड़ दीं। इस तरह ये बेगुनाह मुसलमान खुले मैदान में तड़प-तड़प कर शहीद हो गए।

इन शहीदों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक ख़ास सेवक यसर रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ऊंटों की देखभाल किया करते थे।

जब ये दरिंदे इस वहशियाना (निर्दयी) तरीके से मुसलमानों को शहीद कर चुके, तो उन्होंने सभी ऊंटों को इकट्ठा किया और उन्हें हाँक कर ले जाने लगे।

लेकिन एक ऊंटों का रखवाला किसी तरह बच निकला और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस घटना की ख़बर दी। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत बीस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की एक टुकड़ी तैयार की और उनके पीछे भेजा।

हालाँकि ये लोग काफी दूरी तय कर चुके थे, लेकिन अल्लाह का करम हुआ कि मुसलमान जल्दी पीछा कर सके और उन्हें पकड़ लिया। फिर उन्हें रस्सियों से बाँधकर वापस मदीना ले आए।

उस वक़्त तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर यह आदेश (हुक्म) नाज़िल नहीं हुए थे कि अगर कोई व्यक्ति इस तरह की ग़द्दारी करे, तो उसके साथ क्या सलूक किया जाए।

इसलिए, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पुराने सिद्धांत के अनुसार 'जब तक इस्लाम में कोई नया हुक्म न आए, तब तक यहूदी शरीअत (मूसा की शरीअत) के अनुसार फ़ैसला किया जाए'— इस आधार पर, मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत के अनुसार आदेश दिया कि इन ज़ालिमों को उसी तरह सज़ा दी जाए, जिस तरह उन्होंने मुसलमान रखवालों के साथ किया था।'

यह मूसा अलैहिस्सलाम की शिक्षा थी। जब तक शरीयत के पूरे अहकाम नहीं आए थे, तब तक इसी पर अमल होता था। बहरहाल, यह इसलिए किया गया

''ताकि यह सज़ा दूसरों के लिए इबरत हो।'' लिहाज़ा, थोड़े से बदलाव के साथ इन्हें खुले मैदान में मौत के घाट उतार दिया गया। मगर इस्लाम के लिए अल्लाह ने दूसरी तालीम मुक़र्रर कर रखी थी। इसलिए आगे से जोाबी और क़िसासी सूरत में भी मुश्ला (शरीर को विकृत करने) की सज़ा मना कर दी गई, यानी किसी भी तरह से किसी मक्तूल (मारे गए) के जिस्म को नुकसान पहुंचाना या बदले के तौर पर उसके अंगों को टुकड़े-टुकड़े करना हराम कर दिया गया।

इस वाक़ये के बारे में'' आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि ''हमें ज्यादा लिखने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि बहरहाल,

इस मामले में ज़ुल्म की शुरुआत काफिरों की तरफ़ से हुई थी, जिन्होंने बिना किसी जायज़ वजह के महज़ इस्लाम की अदावत में बेगुनाह मुसलमानों के साथ ऐसाज़ालिमाना और वहशी सुलूक किया। और जो सज़ा उन्हें दी गई, वह महज़ क़िसासी और जोाबी थी।''

यानी जो कुछ दुश्मनों को सज़ा दी गई, वह क़िसास था ''और वह भी ऐसे हालात में, जब कि इस्लाम के खिलाफ़ पूरा मुल्क दुश्मनी और अदावत की आग में जल रहा था। और फिर यह फ़ैसला भी मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत के मुताबिक़ किया गया था। लेकिन इसके बावजूद इस्लाम ने इसे क़ायम नहीं रखा और आगे के लिए इस तरीके से मना कर दिया। ऐसे हालात में कोई भी अकलमंद इस पर एतराज़ नहीं कर सकता। इस मौके पर यह भी याद रखना चाहिए कि ये लोग शुरू से ही बुरी नीयत के साथ मदीना आए थे और मुमकिन है कि अपने क़बीले से सिखाए-पढ़ाए गए थे कि मुसलमानों के बीच रहकर उन्हें नुकसान पहुंचाएं। और यह भी मुमकिन है कि खुद हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के खिलाफ़ भी उनका कोई बुरा इरादा हो। मगर जब मदीना में रहकर उन्हें कोई मौका नहीं मिला, तो उन्होंने यह तदबीर की कि मदीना से बाहर जाकर कार्रवाई करें।

उनकी इस नीयत का अंदाजा इस बात से भी होता है कि उन्होंने मुसलमान चरवाहों के साथ जो सुलूक किया, वह सिर्फ़ चोरों और लुटेरों वाला सुलूक नहीं था, बल्कि इसमें पूरी तरह से इंतेकाम (बदले) का रंग था। अगर वे शुरू में सच्चे दिल से मुसलमान हुए थे और बाद में ऊंट देखकर उनकी नीयत बदल गई, तो ऐसे में होना यह चाहिए था कि वे ऊंट लेकर भाग जाते और अगर कोई रखवाला रोकने की कोशिश करता, तो ज्यादा से ज्यादा उसे मारकर निकल जाते। मगर जिस बेरहमी से उन्होंने मुसलमान चरवाहों को कत्ल किया और अपने आपको ख़तरे में डालकर इस वहशी कत्ल को लंबा किया'' और वहां कुछ देर तक रुके ''और उन्हें अज़ाब देकर मारा, उससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि यह महज़ इत्तेफाकिया लालच का नतीजा नहीं था, बल्कि यह पूरी तरह से दुश्मनी और दिली क़ीना (बुग़्ज़) का नतीजा था।

और उनके इस ज़ालिमाना अमल के जवाब में हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ किया, वह महज़ क़िसासी और जोाबी था, जो इस्लामी अहकाम के नाजिल होने से पहले मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत के मुताबिक़ किया गया था। लेकिन इसके बाद जल्द ही इस्लामी अहकाम नाजिल हो गए और इस किस्म की तकलीफ़ पहुंचाने वाली सज़ा, इंतेकामी रंग में भी, नाजायज़ क़रार दे दी गई।

जैसा कि बुखारी की हदीस के अल्फ़ाज़ हैं:

اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ بَعْدَ ذٰلِكَ كَانَ يَحُثُّ عَلَى الصَّدَقَةِ وَيَنْهٰى عَنِ الْمُثْلَةِ۔

यानि ''इस वाक़ये के बाद हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) एहसान और अच्छे सुलूक की ताकीद फ़रमाया करते थे और हर हाल में दुश्मनों के जिस्मों के मुश्ला (शरीर को विकृत करने) से मना फ़रमाते थे।''

कुछ पश्चिमी शोधकर्ताओं ने, जिनमें मेयर साहब भी शामिल हैं, इस वाक़ये का ज़िक्र करते हुए हमेशा की तरह एतराज़ किया है कि जिस तरह से इन क़ातिल डाकुओं को क़त्ल किया गया, वह ज़ालिमाना और वहशी था। मगर अगर सारे हालात को सामने रखकर गौर किया जाए, तो इस मामले में इस्लाम का दामन बिल्कुल पाक नज़र आता है, क्योंकि असल में यह फैसला इस्लाम का नहीं था, बल्कि मूसा अलैहिस्सलाम का था, जिनकी शरीयत को ईसा मसीह अलैहिस्सलाम ने मंसूख नहीं किया, बल्कि बरक़रार रखा। हाँ, अगर हमारे एतराज़ करने वालों के सामने ईसा मसीह अलैहिस्सलाम का यह क़ौल है कि ''अगर कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी आगे कर दो, और अगर कोई तुम्हारा कुर्ता लेना चाहे, तो उसे अपनी चादर भी दे दो, और अगर कोई तुम्हें एक मील जबरदस्ती ले जाना चाहे, तो दो मील साथ चलो,'' तो बेशक हमारे एतराज़ करने वालों को एतराज़ का हक़ है। परंतु सवाल यह है कि क्या यह तालीम किसी अकलमंद के नज़दीक काबिल-ए-अमल है? और क्या आज तक इन उन्नीस सौ सालों में'' (अब तो दो हज़ार साल से भी ज्यादा हो चुके) ''किसी ईसाई मर्द या औरत, या किसी ईसाई जमाअत या हुकूमत ने इस तालीम पर अमल किया है? मिंबरों पर चढ़कर वाअज़ (प्रवचन) देने के लिए बेशक यह एक उम्दा तालीम है, मगर अमली दुनिया में इस तालीम की कोई अहमियत नहीं है और न ही कोई अकलमंद इस पर अमल करने के लिए तैयार हो सकता है। इस हालत में इस तरह के जज़्बाती उसूलों को सामने रखकर मुसलमानों पर एतराज़ करना, अपनी ही जहालत का सुबूत देना है।

हाँ, मूसा अलैहिस्सलाम की तालीम को सामने रखकर देखो, जो ईसा अलैहिस्सलाम के बरक्स एक सच्चे कानून बनाने वाले थे और क़ानून की हक़ीक़त को अच्छी तरह समझते थे। या ईसाइयों के कथनों को नहीं, बल्कि उनके अमली कारनामों की रोशनी में हालात का जायज़ा लो, तो फिर हकीकत वाज़ेह हो जाती है कि अमली मैदान में कोई मज़हब इस्लाम का मुक़ाबला नहीं कर सकता। क्योंकि इस्लाम जो कहता है, वही करता है, और उसके ''खाने के दांत और दिखाने के दांत'' अलग-अलग नहीं हैं। उसके क़ौल और फ़ेल दोनों उस आला मुकाम पर हैं कि कोई भी अकलमंद और गैर-मुतास्सिब इंसान उन पर एतराज़ नहीं कर सकता, बल्कि दिल से उनकी तारीफ करता है।

न तो वह मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत की तरह यह कहता है कि ''हर हालत में इंतेक़ाम लो और बिना इम्तियाज़ के क़िसास का तरीका अपनाते जाओ,'' और न ही वह मसीही तालीम के मुताबिक़ यह हिदायत करता है कि ''किसी हालत में भी सज़ा मत दो, बल्कि अगर कोई जुर्म करे, तो उसके जुर्म को और मज़बूत करने में उसकी मदद करो।'

बल्कि इस्लाम अफ़रात और तफ़रीत के रास्ते को छोड़कर वह वसती तालीम देता है, जो दुनिया में हकीकी अमन की बुनियाद है, और वह यह कि :

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ

(अश-शूरा: 41)

यानि ''हर बुराई की सज़ा उसकी मुनासिब हद तक होनी चाहिए, लेकिन अगर मुआफ करने से इस्लाह (सुधार) की उम्मीद हो, तो मुआफ करना बेहतर है, और ऐसा शख्स अल्लाह के नज़दीक बड़ा अज्र पाएगा।''

यह वही शिक्षा है जो इस्लाम ने इस बारे में दी है, और कोई भी समझदार व्यक्ति इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि यह एक उत्कृष्ट शिक्षा है जिसमें मानव आवश्यकताओं के सभी पहलुओं को ध्यान में रखा गया है।

सजा के मामले में भी, इस्लाम ने यह शर्त लगाई है कि वह उचित सीमा से आगे न बढ़े, और 'मुस्ला' (शरीर को विकृत करना) जैसे बर्बर कृत्यों को पूरी तरह से निषिद्ध कर दिया गया है। इसके विपरीत, मसीही लोग, हज़रत ईसा नासरी की इस सैद्धांतिक शिक्षा के बावजूद, जो व्यवहारिक उदाहरण वे दुश्मनों के साथ व्यवहार में दिखाते रहे हैं और युद्धों में जिन कृत्यों के वे दोषी होते रहे हैं, वे विश्व इतिहास का एक खुला पन्ना हैं, जिसे यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 747-744)

अब एक ग़ज़वा (युद्ध) का उल्लेख करता हूँ, जिसे ग़ज़वा ज़ील् क़रद कहा जाता है। इसके बारे में सीरत लेखकों और मुहद्दिसीन (हदीस विशेषज्ञों) में मतभेद है कि यह कब हुआ।

मुहद्दिसीन इसे सुलह हुदैबिया के बाद और ग़ज़वा ख़ैबर से पहले, ज़ुल् क़ादा 6 हिजरी और मुहर्रम 7 हिजरी के बीच का ग़ज़वा मानते हैं, जबकि सीरत लेखक इसे ग़ज़वा बनू लहयान के बाद, यानी जुमादा अल-उला 6 हिजरी का ग़ज़वा मानते हैं। इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम के अनुसार, ग़ज़वा ज़ी क़रद ग़ज़वा ख़ैबर से तीन दिन पहले हुआ, और उन्होंने इसका उल्लेख सुलह हुदैबिया के बाद और ख़ैबर से पहले किया है। अल्लामा इब्न हजर ने लिखा है कि इमाम अहमद और इमाम मुस्लिम ने इयास बिन सलमा से जो रिवायत बयान की है, वह इस बात की पुष्टि करती है कि यह ग़ज़वा ख़ैबर से तीन दिन पहले हुआ। इस रिवायत में हज़रत सलमा बिन अक़वा ने पहले सुलह हुदैबिया और फिर ज़ी क़रद की घटना का वर्णन किया। फिर अंत में कहा कि इसके बाद हम मदीना वापस आए, और अभी तीन

दिन ही मदीना में ठहरे थे कि ख़ैबर के लिए रवाना हो गए। इसके विपरीत, सीरत लेखकों में से अल्लामा इब्न इसहाक़ और इब्न साद कहते हैं कि ग़ज़वा ज़ी क़रद 6 हिजरी में सुलह हुदैबिया से पहले हुआ था।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 5, पृष्ठ 106, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)
(अस-सीरतुन्नबविया, इब्न कसीर, पृष्ठ 375 ,365, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)
(शरह अज़-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिया, खंड 3, पृष्ठ 109, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

इसका विश्लेषण हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने पूरी तरह से तो नहीं किया, लेकिन अपनी पुस्तक के शेष हिस्से के लिए जो शीर्षक दर्ज किए हैं, उनमें आपने ग़ज़वा ज़ी क़रद को ग़ज़वा ख़ैबर से पहले, मुहर्रम 7 हिजरी का ग़ज़वा माना है।

(स्रोत: सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 837)

ग़ज़वा ज़ी क़रद को ग़ज़वा ग़ाबा भी कहा जाता है, क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊंटनियाँ यहाँ चरती थीं।

ग़ाबा, मदीना से शाम की ओर चार मील की दूरी पर, उहुद पर्वत के पीछे एक मैदान था, और इसे ग़ज़वा ज़ी क़रद इसलिए कहते हैं कि उयैना बिन हिस्न, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊंटनियों पर हमला करके उन्हें ले गया था, और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़ी क़रद तक उसका पीछा किया। ज़ी क़रद, मदीना से लगभग बारह मील की दूरी पर एक झरना है।

(स्रोत: शरह अज़-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिया, खंड 3, पृष्ठ 109, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)
(फ़रहंग सीरत, पृष्ठ 56 ,217, ज़वार एकेडमी, कराची)

इसकी विस्तृत जानकारी इस प्रकार है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बीस दूध देने वाली ऊंटनियाँ थीं, जिनमें कुछ अन्य ऊंट भी शामिल थे। ये ऊंट मदीना से ख़ैबर के रास्ते पर बैज़ा की चरागाह और बैज़ा से परे पहाड़ तक चरते थे। वहाँ सूखा पड़ गया, तो उन्हें ग़ाबा की ओर ले जाया गया। एक चरवाहा रोज़ाना मग़रिब के समय उनका दूध दुहकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में लाया करता था।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 5, पृष्ठ 95, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत) (सीरत एनसाइक्लोपीडिया, खंड 7)

उययना बिन हिस्न फजारी ने बनू ग़तफ़ान के चालीस घुड़सवारों के साथ उन पर हमला कर दिया और ऊंटनियों को लेकर चले गए। एक रिवायत के मुताबिक, उनका सरदार उययना का बेटा अब्दुर्रहमान था और उययना उनकी मदद के लिए पीछे एक जगह मौजूद रहा। हमले के दौरान दुश्मन ने हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे ज़र को क़त्ल कर दिया, जो उन ऊंटनियों का चरवाहा था, और हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो की बीवी लैला को क़ैद कर लिया, जबकि हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे की बीवी वहीं मौजूद थी लेकिन वह दुश्मन से बच गई।

(शरह अज़-ज़रकानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिया, जिल्द 3, सफह 112-111, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)
(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 95, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

उययना बिन हिस्न कौन था? इसके तआरुफ (परिचय) में लिखा है कि उययना ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के मौके पर कबीला बनू फज़ारा का सरदार था। ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के दौरान, जब काफ़िरों के तीन लश्करों ने बनू क़ुरैज़ा से मिलकर मदीना पर ज़बरदस्त हमला करने का इरादा किया, तो उनमें से एक लश्कर का सरदार उययना था।

(हज़रत सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो - मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 139, मतबा बुक कॉर्नर शो-रूम)

उययना बिन हिस्न ने फतह-ए-मक्का के बाद इस्लाम क़बूल किया। एक रिवायत में है कि उसने फतह-ए-मक्का से पहले इस्लाम क़बूल किया और उसमें शिरकत की।

उसने ग़ज़वा-ए-हुनैन और ग़ज़वा-ए-ताइफ़ में भी हिस्सा लिया। नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे बनू तमीम की सरक़ोबी (दमन) के लिए पचास सवारों के साथ भेजा था। इस जंग में कोई भी अंसारी या मुहाजिर सहाबी शामिल नहीं था। इस सरिय्या (सैन्य अभियान) की वजह यह थी कि बनू तमीम ने आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आमिल (प्रतिनिधि) को सदक़ात (दान) लेकर जाने से रोक दिया था।

बाद में, खिलाफ़त-ए-सिद्दीक़ी (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. के दौर) में, वह बाग़ी मुरतदों के साथ फ़ित्ना-ए-इरतिदाद (इस्लाम से फिर जाने) का शिकार हो गया और जब तुलेहा ने नबूवत (पैग़ंबरी) का दावा किया, तो वह उसके साथ मिल गया।

पहले उसने इस्लाम क़बूल किया, फिर दोबारा मुरतद हो गया और तुलेहा की बैअत कर ली। बाद में, जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के पास क़ैद होकर आया, तो आपने उस पर एहसान करते हुए उसे माफ़ कर दिया, और फिर उसने दोबारा इस्लाम क़बूल कर लिया।

(सीरत अल्-हलबिया, भाग 2, पृष्ठ 376, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)
(अल्-असाबा फी तमयीज़ अस-सहाबा, भाग 4, सफह 639, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)
(माख़ूज़ा: ज़िया-अन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, 4, भाग 567-566, ज़िया-अल-कुरआन पब्लिकेशन, लाहौर)

उसके ईमान की हालत उसके ईमान की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। रिवायत में आता है कि आँहज़रत(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो को ग़ाबा जाने से रोका था। लेकिन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की तंबीह (चेतावनी) के बावजूद हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ाबा गए।

इसकी तफ़सील में लिखा है कि उययना के हमले से पहले, हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से ऊंटनियों की चरागाह की तरफ़ जाने की इजाज़त मांगी।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया :

"मुझे तुम्हारे बारे में डर है कि कहीं दुश्मन तुम पर इस तरफ़ से हमला न कर दे, क्योंकि हम उययना और उसके साथियों से महफ़ूज़ (सुरक्षित) नहीं हैं और यह जगह भी उनकी तरफ़ है।"

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसरार (ज़िद) किया।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:

"मुझे अंदेशा है कि तुम्हारा बेटा क़त्ल कर दिया जाएगा और तुम्हारी बीवी क़ैद कर ली जाएगी, और तुम एक लकड़ी का सहारा लिए हुए वापस आओगे।"

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं

"मुझे ताज्जुब (आश्चर्य) है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुझे इस बारे में आगाह कर रहे थे, और फिर भी मैंने इसरार किया। फिर अल्लाह की क़सम!

वही हुआ जैसा कि आपने फ़रमाया था।"

"मैं घर में था, और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ऊंटनियाँ बाड़े में वापस लाई जा चुकी थीं, उन्हें सैराब किया जा चुका था, यानी पानी और चारा दिया जा चुका था, और उनका दूध भी दुहा जा चुका था। फिर हम सो गए, तो रात के वक़्त उययना ने चालीस घुड़सवारों के साथ हमला कर दिया। उन्होंने रुक कर आवाज़ दी, तो मेरा बेटा बाहर निकला, जिसे उन्होंने क़त्ल कर दिया।"

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, भाग 95, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

इस संदर्भ में हज़रत सलमा बिन अक़वा' रज़ियल्लाहु अन्हो का दुश्मन का पीछा करने का ज़िक्र भी मिलता है।

बुखारी में है कि हज़रत सलमा बिन अक़वा' रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैं फ़ज्र की पहली अज़ान होने से पहले निकला। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दूध देने वाली ऊंटनियाँ ज़ी-क़रद नामक स्थान पर चर रही थीं। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ग़ुलाम रबाह भी थे। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का एक लड़का मुझे मिला। उसने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ऊंटनियाँ छीन ली गई हैं। मैंने पूछा कि उन्हें कौन ले गया है? उसने कहा कि ग़तफ़ान के लोग।

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैंने तीन बार ऊँची आवाज़ में "या सुबहाहु" पुकारा। ये शब्द ख़तरे के समय बोले जाते थे। मैंने इतनी ज़ोर से पुकारा

कि जो लोग मदीना में थे, उन्हें सुनाई दे जाए। उनकी आवाज़ बहुत बुलंद थी। उन्होंने रबाह को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सूचना देने के लिए भेज दिया और ख़ुद तेज़ी से आगे बढ़े, यहाँ तक कि उन हमलावर लुटेरों तक जा पहुंचे। वे अपने जानवरों को पानी पिला रहे थे। हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने तीरों से उन पर हमला करना शुरू किया। वे एक कुशल तीरंदाज़ थे। वे कहते हैं: "मैं इब्न अक़्वा' हूँ और आज सिर्फ़ कायरों की बर्बादी का दिन है!"

वे अकेले ही उनका मुक़ाबला करने निकल पड़े और ऊँची आवाज़ में ये शब्द दोहराते रहे। जब वे पेड़ों के पास होते, तो तीरों से वार करते, और जब दुश्मन तंग घाटियों में पहुंचते, तो पहाड़ पर चढ़कर उन पर पत्थर बरसाते। इसी तरह उन्होंने दुश्मनों से तमाम ऊंटनियाँ छुड़ा लीं।

सहीह मुस्लिम में यह बयान है कि वे लगातार दुश्मनों का पीछा करते रहे, यहाँ तक कि अल्लाह ने उन्हें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सभी ऊंटनियाँ वापस दिलवा दीं। उन्होंने दुश्मनों से तीस चादरें भी छीन लीं, जो वे बोझ हल्का करने के लिए भागते समय फेंक गए थे। जो भी चीज़ वे फेंकते, हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो उस पर एक पत्थर रख देते, ताकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके सहाबा उसे पहचान सकें। वे दुश्मनों का पीछा करते रहे और लगातार उन पर तीर चलाते रहे।

(संदर्भ: बुख़ारी, किताब अल-मग़ाज़ी, हदीस: 4194; सहीह मुस्लिम, किताब अल्-मग़ाज़ी, हदीस: 3358: सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 97-96, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत; ग़ज़वात व सराया, मुहम्मद अज़हर फ़रीद शाह, पृष्ठ 306-305, फरीदिया पब्लिशर्स, साहीवाल)

इतिहास, सीरत और हदीस की अन्य व्याख्याओं के अनुसार यह भी लिखा गया है कि सभी ऊंटनियाँ वापस नहीं लाई जा सकीं। कुछ ऊंटनियाँ दुश्मन अपने साथ ले जाने में सफल हो गया था।

(संदर्भ: सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 107, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरूत)

मदीना में अलर्ट घोषित किया गया जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस घटना की ख़बर मिली, तो मदीना में ऐलान किया गया कि ख़तरे की घड़ी आ गई है। लोगों में यह घोषणा करवा दी गई: "या ख़ैलल्लाहि अर्कबी" यानी "अल्लाह के सवारो! सवार हो जाओ।"

तुरंत घुड़सवार लोग हाज़िर होने लगे। सबसे पहले हज़रत मक़दाद रज़ियल्लाहु अन्हो आए, फिर हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हो, साद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो, उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो, उक्काशा रज़ियल्लाहु अन्हो, मुहरिज़ बिन नज़्ला रज़ियल्लाहु अन्हो, अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हो और अबू अय्याश रज़ियल्लाहु अन्हो भी पहुंच गए।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत साद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर बनाया और आदेश दिया: "दुश्मन का पीछा करो, यहाँ तक कि मैं भी तुम्हारे साथ आ मिलूँ।"

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : "तुम लोग आगे बढ़ो, मैं पीछे से आ रहा हूँ।"

फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पांच सौ या सात सौ सहाबा के साथ निकले। आपने मदीना पर हज़रत इब्न उम्म मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हो को अपना नायब नियुक्त किया और हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हो को तीन सौ सहाबा के साथ मदीना की सुरक्षा के लिए पीछे छोड़ा।

इस अभियान में एक और घटना भी उल्लेखनीय है:

हज़रत अबू अय्याश रज़ियल्लाहु अन्हो का घोड़ा बहुत तेज़ था। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : "अबू अय्याश! क्या तुम अपना घोड़ा किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं दोगे जो तुमसे बेहतर सवार हो, ताकि वह दुश्मन को पकड़ सके?"

हज़रत अबू अय्याश रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: "अल्लाह के रसूल! मैं सबसे अच्छा घुड़सवार हूँ!"

लेकिन जैसे ही उन्होंने घोड़े को दौड़ाया, वह सिर्फ़ पचास गज़ आगे गया और उन्हें गिरा दिया। तब उन्हें समझ आया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इशारा सही था। फिर आपने वह घोड़ा हज़रत मुआज़ बिन माअस रज़ियल्लाहु अन्हो को दे दिया।

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो का संघर्ष दुश्मनों ने देखा कि हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो अकेले ही उनका पीछा कर रहे हैं। उन्होंने सोचा कि पीछे कोई और सेना आ रही होगी। उन्होंने चार लोगों को हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो को पकड़ने के लिए भेजा।

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: "तुम मुझे जानते हो?"

उन्होंने कहा: "नहीं, तुम कौन हो?" हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया: "मैं इब्न अक़्वा' हूँ! उस अल्लाह की क़सम जिसने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्मान दिया है, तुम में से कोई भी मुझे नहीं पकड़ सकता, और अगर मैं पीछा करूँ तो तुम में से कोई मुझसे नहीं बच सकता!"

यह सुनकर वे डर गए और वापस लौट गए।

यह ग़ज़वा (युद्ध) आगे भी जारी रहा, जिसमें और भी घटनाएँ घटीं, जिनका उल्लेख अगले भाग में किया जाएगा।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअात की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमअात इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

129वां जलसा सालाना क़ादियान 29 ,28 ,27 दिसंबर 2024 को आयोजित हो कर बख़ैर ओ ख़ूबी संपन्न हुआ।
तीनों दिनों के जलसा कार्यक्रमों की लाइव स्ट्रीमिंग, जिससे देश और विदेश में जलसे से लाभ प्राप्त किया गया।
लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से 63,666 लोगों ने जलसे की कार्यवाही देखी और सुनी।
16,000 से अधिक आशिक़ाने अहमदियत की जलसे में शिरकत।
42 देशों से विभिन्न क़ौमों के अज़ीज़ और ख़वातीन की नुमाइंदगी।

MTA इंटरनेशनल के ज़रिए सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला) का रोशन बसीरत से भरा समापन

भाषण। समापन भाषण में इस्लामाबाद (यूके) में जमाअत के अज़ीज़ों का इज्तिमा।
कुछ अफ्रीकी देशों के जलसे और समापन भाषण में उनकी शिरकत। नमाज़-ए-तहज्जुद।
दर्स-उल-कुरआन और ज़िक्र-ए-इलाही से मुनव्वर माहौल।
उलमा-ए-किराम के गहरी मालूमात से भरपूर तक़ारीर। 9 भाषाओं में कार्यक्रमों का अनुवाद।
जमाअत के लोगों की मालूमात बढ़ाने के लिए तरबियती उमूर पर आधारित डॉक्युमेंट्री और विभिन्न मालूमाती नुमाइशों का आयोजन।
निकाहों के ऐलान। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसे की कवरेज।
पुरसुकून और ख़ुशगवार माहौल में जलसे की तमाम कार्यवाही का मुकम्मल होना।

शेष भाग..

सैय्यदी! मेरी आँसू भरी आँखें भले ही आपको सामने देखने में असमर्थ हैं, लेकिन इन मुक़द्दस (पवित्र) स्थानों पर आपकी मौजूदगी को महसूस कर रही हैं। ऐसा लग रहा है जैसे हमारे बीच के समय की दूरियाँ मिट गई हैं और आप एक नए जोश व जुनून के साथ हमें मुहम्मदी इश्क़ (ईश्वरीय प्रेम) की रूह से सराबोर करते हुए इस ज़मीन से दूर आसमान की बुलंदियों की ओर ले जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि ज़मीन की गुरुत्वाकर्षण शक्ति ख़त्म हो गई है और हम हवाओं में उड़ रहे हैं। ऐसा महसूस हो रहा है कि आँख का अंधापन दूर हो गया है और उसकी जगह रोशन आँख और तेज़ नज़र ने ले ली है।

मेरे आका, मैं कल्पना में आपको मस्जिद मुबारक की पुरानी सीढ़ियों से अल्लाह के इश्क़ में मग्न, लोगों के दुखों का बोझ उठाए हुए आता देख रहा हूँ। कभी आप आँसू भरी आँखों से "बैतुद्दुआ" (दुआ करने का स्थान) में अपने महबूब ख़ुदा से राज़ व नियाज़ करते हैं, तो कभी "बैतुल फ़िक्र" में, कभी "बैतुल रियाज़त" में अपने रब से मुनाजात (प्रार्थना) करते हैं, तो कभी मस्जिद मुबारक में।

इस कल्पना में डूबने की मेरी बस इतनी ही तमन्ना है कि शायद मुझे भी आपके इश्क़-ए-इलाही (ईश्वरीय प्रेम) का कोई मामूली हिस्सा मिल जाए, जिससे मेरे दिल को सुकून मिल सके और मेरी रूह की प्यास बुझ सके।

मेरे आका, जब मैं आपकी, आपके परिवार की और आपके सहाबी (साथी) हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो की रिहाइशगाहों में गया और उनके कमरों और दरवाज़ों से गुज़रा, तो ऐसा लगा जैसे उन मुक़द्दस जगहों के हर ज़र्रे से एक अजीब रूहानी ताक़त फूट रही थी, जो मेरी रूह में समा रही थी और मेरी आत्मा के सुकून का कारण बन रही थी।

और यह कोई अजीब बात नहीं, क्योंकि मैं जिस घर की बात कर रहा हूँ, वह आपका घर है और जिस जगह की बात कर रहा हूँ, वह क़ादियान दारुल अमान है। मेरे आका, मैं आपकी दारुज़्ज़ियाफ़त (भोजनालय) में भी गया, जिसने शुरू में आपके साथियों की मेहमाननवाज़ी की और वह उन लोगों की पनाहगाह बन गई जिनका कोई ठिकाना नहीं था। और यह सिलसिला आज भी जारी है।

सैय्यदी, आप घरानों के घराने अपने दस्तरख़्वान (भोजन) पर खिलाने वाले बन चुके हैं और आपके नाम के लंगर दुनिया के हर कोने में चल रहे हैं।

मेरे आका, आपकी बस्ती में हर कदम पर हम आपको याद करते हैं और हर बात पर आपका ज़िक्र करते हैं।

ऐ वो हस्ती जिसने इंसानी हमदर्दी की मिसाल कायम की और अल्लाह की तमाम मख़लूक़ को, यहाँ तक कि अपने दुश्मनों को भी ख़ुद पर तरजीह दी! ऐ वो शख़्सियत जिसकी मुहब्बत (प्रेम) माँओं की अपनी औलाद से मोहब्बत से भी बढ़कर थी!

आज आपके ख़ादिम (सेवक) आपकी पाक सीरत (पवित्र जीवन) में वर्णित इंसानियत की सेवा के उन क़िस्सों को दोहरा रहे हैं, जो आपने ग़रीबों, बेसहारों और ज़रूरतमंदों के साथ नेक बर्ताव करके दर्ज किए थे।

मेरे आका, जब मैं "बहिश्ती मक़बरा" (जन्नती क़ब्रिस्तान) में दाख़िल हुआ, तो मेरे दिल में एक अजीब सुकून, इत्मिनान और राहत का अहसास हुआ। और जब मैं आपके मजार-ए-मुबारक के करीब पहुँचा, तो उसकी दीवारों पर लिखी इबारतों को पढ़कर मेरे दिल में एक टीस उठी और इस फ़ानी दुनिया से नफ़रत सी हो गई।

फिर जब मैं आपके मजार के और क़रीब हुआ, तो दिल का सारा बोझ आँसुओं के द्वारा हल्का करने की कोशिश की।

बहिश्ती मक़बरा में बार-बार मैं उस जगह बैठा जहाँ आप अपने असहाब (साथियों) के साथ इरफ़ान (ज्ञान) की मज्लिसें लगाया करते थे। वहाँ बैठकर दिल ने बार-बार यह तमन्ना की कि काश मैं भी उन मज्लिसों में शामिल होता।

फिर जब मेरी नज़र सफ़ेद मीनार पर पड़ी, तो उसकी ख़ूबसूरती देखकर और उसकी अज़मत (महानता) को महसूस करके मेरा दिल ख़ुशी और सुकून से भर गया।

फिर मैंने "कुदरत-ए-सानिया" (ख़िलाफ़त) के मक़ाम की ओर देखा और कहा:

"मेरे आका, आपकी हर बात सच साबित हुई। ऐ सच्चे और सिद्दीक़! दुनिया में कितने लोगों ने ख़िलाफ़त क़ायम करने की कोशिश की, लेकिन उनकी सारी कोशिशें सिर्फ़ एक बुलबुले और मृगतृष्णा की तरह साबित हुईं। लेकिन आपके बाद क़ायम होने वाली "कुदरत-ए-सानिया" (ख़िलाफ़त) आज भी ज़मीन पर बाक़ी है।

सैय्यदी! इन मुक़ामात की यादें मेरे दिल में हमेशा ज़िंदा रहेंगी, जो मुझे उन मुक़द्दस लम्हों की याद दिलाती रहेंगी, जो मैंने आपकी बस्ती और आपके मजार के क़रीब गुज़ारे।"

(किस्त तीसरी)

तारीख़: 29 दिसंबर 2024, दिन: रविवार तीसरा दिन, पहला सत्र

सम्माननीय नाज़िम आला और अमीर जमाअत क़ादियान ने ठीक 10 बजे लौए-अहमदियत (अहमदियत का झंडा) फहराया और दुआ करवाई। तीसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता सम्माननीय मौलाना मुनीर अहमद खादिम साहब, एडिशनल नाज़िम इस्लाह व इरशाद (दक्षिणी भारत) ने की।

कुरआन-ए-करीम की तिलावत सम्माननीय हाफ़िज़ वक़ास रशी साहब (छात्र, जामिया अहमदिया क़ादियान) ने की और इसका अनुवाद सम्माननीय मौलाना ताहिर अहमद तारिक साहब, (नायब नाज़िम इस्लाह व इरशाद मरकज़िया) ने प्रस्तुत किया।

सम्माननीय साकिब महमूद साहब (छात्र, जामिया अहमदिया क़ादियान) ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) की नज़्म "मुस्तफ़ा पर तेरा बे-हद हो सलाम और रहमत" पढ़ी।

पहली तक़रीर: पहली तक़रीर "ख़तम-ए-नबूवत के बारे में जमाअत अहमदिया का इस्लामी अकीदा" के शीर्षक पर इस नाचीज़ (वक्ता) ने पेश की।

तक़रीर का सारांश: ग़ैर-अहमदियों की ओर से अहमदियों पर बहुत से इल्ज़ामात (आरोप) लगाए जाते हैं। उनमें से एक बेहद तकलीफ़देह और बे-बुनियाद इल्ज़ाम यह है कि हज़रत मसीह मौऊद व महदी मौऊद (अलैहिस्सलाम) और उनकी जमाअत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ातम-उन-नबीयीन नहीं मानती। यह एक ऐसा झूठा और निराधार आरोप है, जिससे हमें बहुत दुख और तकलीफ़ होती है।

सबसे पहले, मैं ख़ातम-उन-नबीयीन के बारे में हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का हलफिया बयान पेश करता हूँ:

"मुझे अल्लाह की इज़्ज़त और जलाल की क़सम है कि... मैं इस बात पर पूरा ईमान रखता हूँ कि हमारे रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तमाम रसूलों से अफ़ज़ल और ख़ातम-उन-नबीयीन हैं।"

(हम्मामतुल बुशरा (उर्दू अनुवाद), पृष्ठ 36)

एक और स्थान पर आप (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"यह भी याद रखना चाहिए कि हम पर यह आरोप लगाया जाता है कि हम रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ातम-उन-नबीयीन नहीं मानते। यह हम पर एक बहुत बड़ा झूठ और अफ़्तिरा (मिथ्या आरोप) है। हम जिस यक़ीन, मारिफ़त (ज्ञान) और बसीरत (दृष्टिकोण) के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ातम-उल-अनबिया मानते हैं, उसका लाखवाँ हिस्सा भी दूसरे लोग नहीं मानते। वे सिर्फ़ अपने बाप-दादा से सुना हुआ एक शब्द जानते हैं, मगर उसकी असलियत से अनजान हैं। वे यह नहीं जानते कि ख़तम-ए-नबूवत क्या है और उस पर ईमान लाने का असली मतलब क्या है? मगर हम पूरे इल्म और बसीरत के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ातम-उल-अनबिया मानते हैं। अल्लाह तआला ने हम पर ख़तम-ए-नबूवत की हक़ीक़त को इस तरह खोला है कि इसके मारिफ़त के शरबत में हमें जो लज़्ज़त मिलती है, उसका अंदाज़ा वही कर सकता है जो इस चश्मे (स्रोत) से सैराब हुआ हो।"

(मल्फ़ूज़ात, खंड 1, पृष्ठ 227, मुद्रित क़ादियान 2003)

आप (अलैहिस्सलाम) आगे फ़रमाते हैं :

"जिस यक़ीन और बसीरत के साथ मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और उनकी जमाअत हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ातमन-नबीयीन मानती है, उसका लाखवाँ हिस्सा भी वे लोग नहीं मानते जो खुद को ख़तम-ए-नबूवत के रखवाले कहते हैं।"

वक्ता ने क़ुरआन-ए-करीम की आयतों और हदीसों का हवाला देते हुए बताया कि उम्मती नबूवत (सामान्य भविष्यवाणी प्राप्त पैग़ंबर) का दरवाज़ा बंद नहीं हुआ है।

उन्होंने इस विषय पर उलेमा-ए-उम्मत (इस्लामी विद्वानों) के कथनों को भी प्रस्तुत किया। इसके अलावा, ख़तम-ए-नबूवत की वास्तविकता और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के महान स्थान और रुतबे पर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के फरामीन (उपदेश) पेश किए।

वक्ता ने स्पष्ट किया कि "ख़ातम-उन-नबीयीन" का अर्थ यह है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आख़िरी शरई नबी (शरीअत वाले नबी) हैं और उनके माध्यम से नबूवत की पूर्णता प्राप्त हो गई। लेकिन इसका अर्थ यह हरगिज़ नहीं कि उनके बाद कोई उम्मती नबी (उनकी उम्मत में से कोई नबी) नहीं आ सकता।

तक़रीर का समापन: वक्ता ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का निम्नलिखित कथन प्रस्तुत करके अपनी तक़रीर समाप्त की:

सैयदना हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

दुनिया की मिसालों में से हम "खत्म-ए-नबूवत" की मिसाल इस तरह दे सकते हैं कि जैसे चाँद हिलाल से शुरू होता है और चौदहवीं तारीख पर आकर अपनी पूर्णता को पहुँच जाता है, जब उसे "बदर" कहा जाता है। इसी तरह, पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर आकर नबूवत की पूर्णता हो गई। जो लोग यह मानते हैं कि नबूवत जबरदस्ती खत्म कर दी गई और यह कि पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को युनुस (अलैहिस्सलाम) से भी श्रेष्ठ नहीं मानना चाहिए, उन्होंने इस सच्चाई को समझा ही नहीं है और पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुणों और उनकी महानता का कोई ज्ञान ही नहीं रखते।

इसके बावजूद वे यह कहते हैं कि हम "खत्म-ए-नबूवत" के इनकार करने वाले हैं। मैं ऐसे लोगों को क्या कहूँ और उन पर कितना अफसोस करूँ? अगर उनकी यह हालत न हुई होती और वे इस्लाम की सच्चाई से पूरी तरह दूर न हो गए होते, तो फिर मेरे आने की जरूरत ही क्या थी? इन लोगों की ईमान की हालत बहुत कमजोर हो गई है और वे इस्लाम के उद्देश्य और उसके असली मायने से पूरी तरह अनजान हैं। वरना कोई कारण नहीं हो सकता था कि वे सच्चे लोगों से दुश्मनी रखते, जिसका नतीजा उन्हें काफिर बना देता है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 228, मुद्रित क़ादियान 2003)

इस सभा का दूसरा भाषण, आदरणीय मौलवी शेख़ फातिहुद्दीन शाहिद (नाएब अमीर व एडिशनल मुबल्लिग़, दिल्ली और विशेष दाई, ज़िला दिल्ली) ने "दावत इलल्लाह के लिए हज़रत मसीह मौऊद का जोश, हुज़ूर अनवर की नसीहतें और जमाअत अहमदिया की ज़िम्मेदारियाँ" विषय पर दिया।

उन्होंने बताया कि सैयदना हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के दिल में इस्लाम के प्रचार के लिए जो जज़्बा था, वह कितना प्रबल था। उन्होंने कहा कि 1885 में जब हज़रत सूफी अहमद जान साहिब लुधियानवी हज के सफर पर जाने लगे, तो हज़रत मसीह मौऊद ने उन्हें एक विशेष दुआ लिखकर दी और कहा कि यह दुआ विशेष रूप से "ख़ाना काबा" और "मैदान अरफ़ात" में जरूर करें:

"ऐ सबसे ज्यादा रहम करने वाले अल्लाह! जिस कार्य के प्रचार के लिए तूने मुझे नियुक्त किया है और जिस सेवा के लिए तूने मेरे दिल में जोश डाला है, उसे अपने ही फज़्ल से अंजाम तक पहुँचा। और इस अदने बंदे के हाथ से इस्लाम की सच्चाई को उसके विरोधियों और उन सभी तक पहुँचा दे जो अब तक इस्लाम की खूबियों से अनजान हैं।"

(तारीख-ए-अहमदियत, भाग 1, पृष्ठ 265)

सैयदना हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"मैं उस मौला करीम का इस वजह से भी शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे इस्लाम के प्रचार के जोश में इतनी ताकत दी है कि अगर इस राह में मुझे अपनी जान भी कुर्बान करनी पड़े, तो यह मेरे लिए कोई भारी बात नहीं होगी।"

"मैं चाहता हूँ कि मेरी पूरी ज़िंदगी इसी सेवा में लग जाए। असली ख़ुशी और बरकत वाली ज़िंदगी वही है, जो अल्लाह के दीन की सेवा और प्रचार में गुज़रे।"

(आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ायन, भाग 5, पृष्ठ 35)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अगर हमारे बस में होता, तो हम फकीरों की तरह घर-घर जाकर अल्लाह के सच्चे दीन का प्रचार करते और दुनिया में फैले हुए इस विनाशकारी शिर्क और कुफ्र से लोगों को बचाते। अगर अल्लाह हमें अंग्रेज़ी भाषा सिखा देता, तो हम खुद जाकर प्रचार करते और इसी में अपनी ज़िंदगी खत्म कर देते, चाहे हमें मार ही दिया जाए।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 219, एडिशन 2003)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह खामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला) फ़रमाते हैं:

"अब हिदायत के प्रचार का कार्य हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को सौंपा गया है। वही हिदायत, जो पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पूरी मानवता के लिए लाए थे और जिसकी प्रचार के लिए वे बेचैन रहते थे, उसकी पूर्णता का यही युग है, जब सभी साधन उपलब्ध हैं।"

"जिस तरह यह कार्य हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को सौंपा गया था, अब यह उनके मानने वालों के सुपुर्द किया गया है। उन लोगों के सुपुर्द किया गया है जो यह अहेद करते हैं कि हम दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देंगे।"

(ख़ुत्बा जुमा, 11 नवंबर 2016)

इस सभा का तीसरा और अंतिम भाषण, आदरणीय हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ साहिब (एडिशनल नाज़िर आला, दक्षिण भारत) ने "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह के इश्क़ के आईने में" विषय पर दिया।

उन्होंने सूरह आले-इमरान (आयत 32) की तिलावत की, जिसका अनुवाद यह है:

"कह दो, अगर तुम अल्लाह से प्यार करते हो, तो मेरी पैरवी करो। अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा, और अल्लाह अत्यंत क्षमाशील और

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 06 March 2025 Issue No. 10

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

दयालु है।"

सैयदना हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"मैं वह आईना हूँ जिसमें मुहम्मदी रूप और मुहम्मदी नबूवत की पूर्ण छवि प्रतिबिंबित होती है।"

(नुज़ूल-उल-मसीह, रूहानी खज़ायन, भाग 18, पृष्ठ 382-381, हाशिया)

पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सपनों और साक्षात्कारों में, यहाँ तक कि जाग्रत अवस्था में भी अपने सच्चे प्रेमी, हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी (अलैहिस्सलाम) को मिलने का सम्मान प्रदान किया।

अल्लाह तआला कुरआन में फ़रमाता है:

"ऐ ईमान लाने वालों! तुम भी इस नबी पर दरूद भेजो और दिल से सलाम करो।"

(सूरह अहज़ाब, आयत 56)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"एक रात मैंने इतनी अधिक मात्रा में दरूद शरीफ पढ़ा कि मेरा दिल और आत्मा इससे सुवासित हो गई। उस रात मैंने स्वप्न में देखा कि स्वच्छ जल के रूप में नूर से भरी हुई मशकें मेरे घर में लाई जा रही हैं, और एक फरिश्ते ने कहा: 'ये वही बरकते हैं, जो तूने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर भेजी थी।'"

(रूहानी खज़ायन, भाग 1, पृष्ठ 598, ब्राहीने अहमदिया, भाग 4)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं:

"मेरी जान और दिल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सौंदर्य पर फिदा हैं, और मेरी मिट्टी, अहले-मुहम्मद के मार्ग पर कुर्बान है।"

(आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ायन, भाग 5, पृष्ठ 645)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"ख़ुदा की क़सम, अगर मेरी सारी औलाद और औलाद की औलाद और मेरे सारे दोस्त और मेरे सारे मददगार मेरी आँखों के सामने क़त्ल कर दिए जाएँ, और मेरे हाथ-पैर काट दिए जाएँ, और मेरी आँख की पुतली निकाल फेंकी जाए, और मैं अपनी तमाम मुरादों से महरूम कर दिया जाऊँ... तो भी मेरे लिए यह सदमा ज़्यादा भारी है कि रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ऐसे नापाक हमले किए जाएँ।"

(आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 5, पृष्ठ 15, अरबी भाग का उर्दू अनुवाद)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "तमाम आदमज़ादों के लिए अब कोई रसूल और शफ़ी नहीं मगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम... सो तुम कोशिश करो कि सच्ची मोहब्बत इस जाओ-जलाल वाले नबी के साथ रखो और उसके अलावा किसी को भी किसी भी तरह की बड़ाई मत दो, ताकि आसमान पर तुम निजात याफ़्ता (मोक्ष प्राप्त करने वाले) लिखे जाओ।"

(कश्ती-ए-नूह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 19, पृष्ठ 13)

सम्मेलन में अंतिम भाषण फ़ाज़िल मुकर्रर (सम्मेलन के वक्ता) ने अपने भाषण के अंत में हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला का निम्नलिखित निर्देश पेश किया और इसके साथ ही अपना भाषण समाप्त किया:

"आज हर अहमदी की ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी है, जिसने इस ज़माने के इमाम को पहचाना है कि वह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के जज़्बे से बहुत दरूद पढ़े और दुआएँ करे—अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी। अल्लाह तआला उम्मत-ए-मुस्लिम को तबाही से बचाए... आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि हम अपनी दुआओं में उम्मत-ए-मुस्लिम को जगह दें।"

(ख़ुत्बा जुमा, 24 जनवरी 2006)

तास्सुरात व तारुफ़ी तक़रीर (मेहमानों के भाषण और प्रतिक्रियाएँ)

मुअक्क़र हाफ़िज़ इस्माईल अहमद अडोसी साहिब, मुरब्बी सिलसिला व कोऑर्डिनेटर एमटीए घाना ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि घाना से 29 व्यक्तियों का एक क़ाफ़िला, जो जमाअत के सदस्यों पर आधारित है, जलसा सालाना क़ादियान में शिरकत के लिए आया है। इनमें 11 लोग जामिआ अहमदिया घाना से स्नातक (ग्रैजुएट) हुए मुरब्बीयान (धर्म-प्रचारक) हैं। उन्होंने कहा, "क़ादियान हमारी जमाअत का दिल है और आज जमाअत-ए-अहमदिया पूरी दुनिया में फैल चुकी है। घाना में बहुत से लोगों ने सच्चे ख्वाब (सपने) देखकर अहमदियत में शमूलियत (शामिल) की है।"

इसके बाद मुअक्क़र रूफ़तज़हान तुक़ामदोव, अमीर-ए-क़ाफ़िला कज़ाकिस्तान ने अपने तास्सुरात (अनुभव) बयान किए। उन्होंने कहा कि उनके लिए यह बहुत बड़ी सआदत (सौभाग्य) और खुशकिस्मती की बात है कि उन्हें जलसा सालाना क़ादियान में शिरकत और तक़रीर (भाषण) का शरफ़ हासिल हुआ। उन्होंने आगे बताया, "कज़ाकिस्तान में अब तक छह सौ से ज़्यादा स्थानीय लोग बैअत कर चुके हैं और अहमदियत यानी असली इस्लाम से लोग प्रभावित हो रहे हैं। हमारे लिए दुआ करें कि जल्द हमारी जमाअत की रजिस्ट्रेशन हो जाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह पेशगोई (भविष्यवाणी)—कि मैं अहमदियत को रूस में रेत के ज़र्रों (कणों) की मानिंद देखता हूँ जल्द पूरी हो, और रूस की सत्ता जल्द जमाअत के हाथ में आए।"

उन्होंने अंत में कज़ाकिस्तान के लिए दुआ की गुज़ारिश करते हुए अपनी तक़रीर समाप्त की। इसके बाद सद्र-ए-इजलास (सम्मेलन अध्यक्ष) ने इजलास (बैठक) के समापन की घोषणा की।

इख़्तितामी तक़रीब (समापन समारोह) जलसा सालाना क़ादियान 2024 का अंतिम सत्र मुअक्क़र मौलाना मुहम्मद इनआम ग़ोरी साहिब, नाज़िर-ए-आला व अमीर-ए-मकामी क़ादियान की सदारत (अध्यक्षता) में आयोजित हुआ।

इसका आग़ाज़ मुअक्क़र मुरशद अहमद डार साहिब, उस्ताद जामिआ अहमदिया क़ादियान की तिलावत से हुआ, जिन्होंने क़ुरआन करीम की सूरह हम-सज्दह की आयात 31 से 35 की तिलावत की। इसके बाद मुअक्क़र अताउल्लाह नुसरत साहिब, नायब नाज़िर-ए-बैत-उल-माल क़ादियान ने इन आयात का उर्दू तर्जुमा पेश किया।

इसके बाद मुअक्क़र तनवीर अहमद नासिर साहिब, नायब नाज़िर-ए-नशर-ओ-अशाअत क़ादियान ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निम्नलिखित नज़्म बहुत खूबसूरती से पढ़कर सुनाई।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
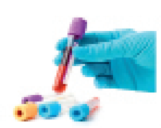
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad